बस कुछ दिन और .....

छिड़ा हुआ 'कोरोना संग्राम' देश विदेश में ढ़हे, उसके कहर से हैं, 'सब परिचित'

सबकी शंकाओं, मन में बसे अनेकों वहमों, विपदा की इस घड़ी में, संधर्ष के रास्ते में,

अफवाओं की ऑधी को रोकने का, एक मात्र साधन 'लॉकडाउन' ही था।

कुछ फैसले, हमारे नहीं वक्त के होते है, उसी में होती है, सब की भलाई

आज की स्थिति में ,वास्तव में यही है 'सही कदम' चुनौतियों से लड़ाई का भी,

है 'सरकारी मशीनरी' भी पूरी तरह सर्तक व जागरूक, हर सम्भव कोशिश

सब की जान और जहान बचाने की, 'भाग कोरोना मन्त्र' दोहराने की

पीएम जी, आप 'सही पकड़े हैं'

आज सब बन्द है मन्दिर, मस्जिद, गुरूद्वारें, कल खुल भी जायगें

न भुले, हम सब उन्नीस में आया 'कोविड काल' का कहर

भारी भरपाया, बीस सौ बीस में भी ,, जिसका अन्त

न ही सम्भ्व है, नौ ग्रहों शान्ति से, न तप न जप से,

न ही इसे माने , किसी विधि का विधान ।

बस जरूरत है, मै ,तुम, आप, व हम सब मिलकर लड़े, इस जंग को

परिवार का हर सदस्य है, 'एक यौद्वा' विजय अवश्य होगी 'सम्भ्व'

इस संकट में, आज आई है, अपनी बारी, कुछ कर गुजरने की ।

अब कर्म हमें है करना, मेहनत जरूर रंग लॉएगी, फल अवश्य दिखेगा

नकारात्मक सोच व तनाव को न आने दे 'घर ऑगन' में

पीछें से एक आवाज है गूंजी, ठीक भा 'सही पकड़े है'

न भुले हम़, इसी काल में हमसब ने बहुत कुछ है, सीखा व सिखाया

चाहे झप्पी व पप्पी न हो सकी, पर जो पाया ,वो भी है 'अनमोल'

चलिए, वर्चुअल चश्में पहन कर, सैर पर निकले और देखे दुनिया।

आज घर का हर सदस्य खड़ा है 'एकदूजें' के लिए **24/7**

लगा रहा है पुकार, बार बार 'हाथ धोने' की ।

बचपन में सीखी आदतों का, ईमानदारी से हो रहा 'सम्पूर्ण पालन'

सबनें अनुशासन को है, जाना और उसकी एहमियत को है, पहचाना

परिवार हो जब 'एक साथ' इस युद्ध में, विपदा की इस घड़ी में,

सरल होगा, इससे 'कोरोना वायरस' को मार भागाना।

हर दिन नया सवेरा, नई उमंग़, नया प्रॉजेक्ट, दिनभर का

वो भी सिर्फ, परिवार के लिए ,बड़े दिनों बाद एकजुट हुए है, 'हमसब'

जिन्दगी की दौड़ में, यूँ थे व्यस्त, न दे पाये 'समय' हर सदस्य को ।

बच्चें हो या बूढ़ें, सब की खुशियाँ हैं, आज चरम सीमा पर

'आज का मैन्यू' पिता व पति से पूछनें का 'हक' भी इसी में है, मिला

पुरूषों को भी, घर रसोई में दखल करने का मौका व

उसे न गवानें का अवसर, का 'हौसला' भी अभी ही मिला

सकारत्मक नजरियें से ही, हर बुराई में अच्छाई को देखे, बुझें व समझें

यही नहीं, सालों पहले शुरू हुआ 'सफाई अभियान' आज है, अपने पूरे शबाब पे ।

कभी न मानने वाले, डंडे के डर से ही सही, मान रहे 'नियम कानून'

हर क्षेत्र में बिगड़े रास्तों को सुधारने व संवारने का काम, जो भी किया ,

अभी ही तो हुआ, तन, मन, धन ,हम सब की इच्छाशक्ति से भी हुआ है 'सम्भव'

यूँ नहीं नीचे गिरा है, प्रदूषर्ण का स्तर, और न ही रही अब राम जी की 'गंगा मैली'

याद रहेगा, इस दौरान घर बैठे हर नागरिक का यह 'योगदान'

आज न करे, विरान गलियों व सड़को पर सैर सपाटा, मौज मस्ती

बस 'कुछ दिनु' और लौट आएगी, जिन्दगी की गाड़ी पटरी पर

ड़टे रहे मोर्चे पर, अभी आगे की जंग है, लड़नी 'हम सब' को

इस समय का सम्पूर्ण आनन्द ले, परिवार में खुशियॉ बॉटें, उन्हें संजोते रहे।

घर में ही रहे, अच्छी आदतें निभाते रहे,मास्क पहनें ,हाथ धोने को जुनून 'बनाए'

'लॉकडाउन' को हल्के से न ले, इसी में है, हम सब की भलाई , स्वस्थ रहें।

क्या समझें ...दादी की बात सुनें 'सही पकड़े हैं'

गीतांजलि सक्सेना

19 अप्रैल 2020